Reflective-Projective Theory of Mass Communication

जन संचार का उभार–प्रतिबिम्ब सिद्धांत

Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 19/06/2021

- जन संचार का उभार–प्रतिबिम्ब सिद्धांत का प्रतिपादन वर्ष **1979** में 'ली जोविंकर' ***'Lee Loevinger'*** ने **The Ambiguous Mirror : The Refelective Projective theory of Broadcasting and Mass Communication** नामक शोध में किया। इनके अनुसार, यह सिद्धांत मास मीडिया को एक दर्पण की भांति मानता है।

- इस सिद्धांत में जनसंचार से दर्पण की भांति समाज का प्रतिबिम्ब उभरता है जिसे प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता अपनी दृष्टि से अपने को और समाज को देखता है। इस सिद्धांत में प्रसारण माध्यमों के तथ्यों का मूल्यांकन अन्य संचार सिद्धांतों की अपेक्षा व्यापक रूप से किया गया है।

- संचार का उभार प्रतिबिम्ब सिद्धांत के अनुसार, संचार माध्यम समाज के विभिन्न स्वरूपों का प्रतिबिम्ब दिखाता है। इसमें प्रसारण माध्यम को साधारण दर्पण नहीं माना गया है। बल्कि उसे एक **टेलीस्कोपिक दर्पण** के समान शक्तिशाली माना गया है। जिसके द्वारा अधिक दूरी तक संदेश को प्रभावशाली ढंग से भेजा जाता है। प्रसारण माध्यम एक इलेक्ट्रॉनिक दर्पण है जिसके द्वारा समाज के समग्र एवं मूल संदर्भों को प्रतिबिम्बित एवं प्रेषित किया जाता है।

- यह माध्यम ऐसी नयी संस्कृति अथवा ऐसी बिम्ब को प्रसारित नहीं करता जो समाज में व्याप्त न हो। यह माध्यम समाज के अनेक स्वरूप को चित्रित करता है। प्रसारण माध्यम टेलीस्कोपिक कैमरे की भांति होता हैं। जिस प्रकार टेलीस्कोपिक कैमरे से प्रतिबिम्ब को छोटा अथवा बड़ा किया जा सकता है उसी प्रकार प्रसारण माध्यमों द्वारा समाज का प्रतिबिम्ब छोटा और बड़ा किया जाता है।

- संचार माध्यमों की सहायता से समाज को पूर्ण तथा वास्तविक रूप में प्रतिबिम्ब किया जाता है। संचार माध्यम समाज के अनेक स्वरूपों का चित्रण करता है। चाहे श्रोता हो या दर्शक, संचार माध्यमों को वह अपनी दृष्टि के अनुसार देखता है। व्यक्ति उस माध्यम पर अपना एक विचार बनाता है। इस सिद्धांत की मान्यता है कि जनसंचार माध्यम समकालीन समाज का एक उपयोगी उपकरण है।

- यह सिद्धांत संचार माध्यमों की विषयवस्तु एवं संदर्भों को मनोवैज्ञानिक तरीके से व्याख्या करता है। जिसमें श्रोता के दृष्टिकोण को भी स्पष्ट किया जाता है। इस प्रकार संचार माध्यम की विषयवस्तु एवं श्रोता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस सिद्धांत का आधार है। यह सिद्धांत न केवल श्रोता के संवेदना को व्यक्त करता है बल्कि यह संचार माध्यम के प्रमुख आयामों को भी स्पष्ट करता है।

धन्यवाद